श्री हनुमान चालीसा

श्री गुरू चरण सरोज रज निज मन मुकुरु सुधारि |
बरनउं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥१॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार |
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार ॥ २ ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर | जय कपीस तिहुं लोक उजागर ॥ ३ ॥
राम दूत अतुलित बल धामा | अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥ ४ ॥

महावीर बिक्रम बजरंगी | कुमति निवार सुमति के संगी ॥ ५ ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा | कानन कुंडल कुँचित केसा ॥ ६ ॥

हाथ बज्र और ध्वजा बिराजे | काँधे मूंज जनेऊ साजे ॥ ७ ॥
शंकर सुवन केसरी नंदन | तेज प्रताप महा जगवंदन ॥ ८ ॥

विद्यावान गुनि अति चातुर | राम काज करिबे को आतुर ॥ ९ ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया | राम लखन सीता मन बसिया ॥ १० ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा | विकट रूप धरि लंक जरावा ॥ ११ ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे | रामचंद्र के काज सवाँरे ॥ १२ ॥

लाय संजीवन लखन जियाए | श्री रघुबीर हरषि उर लाए ॥ १३ ॥
रघुपति किन्ही बहुत बड़ाई |तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥ १४ ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं | अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥ १५ ॥
सनकादिक ब्रहमादि मुनीसा | नारद सारद सहित अहीसा ॥१६ ॥

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते | कवि कोविद कहि सकें कहाँ ते ॥ १७ ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं किन्हा | राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥ १८ ॥

तुम्हरो मंत्र विभीषन माना | लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥ १९ ॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू | लील्यो ताहि मधुर फ़ल जानू ॥ २० ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं | जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं ॥ २१ ॥
दुर्गम काज जगत के जेते | सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ २२ ॥

राम दुआरे तुम रखवारे | होत ना आज्ञा बिनु पैसारे ॥ २३ ॥
सब सुख लहै तुम्हारी शरना |तुम रक्षक काहु को डरना ॥ २४ ॥

आपन तेज सम्हारो आपै | तीनों लोक हाँक तै कांपै ॥ २५ ॥
भूत पिशाच निकट नहि आवै |महाबीर जब नाम सुनावै ॥ २६ ॥

नासै रोग हरे सब पीरा | जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥ २७ ॥
संकट तै हनुमान छुडावै | मन करम वचन ध्यान जो लावै ॥ २८ ॥

सब पर राम तपस्वी राजा | तिन के काज सकल तुम साजा ॥ २९ ॥
और मनोरथ जो कोई लावै | सोइ अमित जीवन फ़ल पावै ॥ ३० ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा | है परसिद्ध जगत उजियारा ॥ ३१ ॥
साधु संत के तुम रखवारे | असुर निकंदन राम दुलारे ॥ ३२ ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता | अस वर दीन्ह जानकी माता ॥ ३३ ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा | सदा रहो रघुपति के दासा ॥ ३४ ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै | जनम जनम के दुख बिसरावै ॥ ३५ ॥
अंतकाल रघुवरपूर जाई | जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥ ३६ ॥

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

और देवता चित्त ना धरई | हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥ ३७ ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा | जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥ ३८ ॥

जै जै जै हनुमान गुसाईं | कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥ ३९ ॥
जो सत बार पाठ कर कोई | छूटइ बंदि महा सुख होई ॥ ४० ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा होय सिद्ध साखी गौरीसा ||
तुलसीदास सदा हरि चेरा कीजै नाथ हृदय महं डेरा ||

पवन तनय संकट हरन मंगल मूरति रूप |
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ||

|| इति श्री हनुमान चालीसा सम्पूर्ण ||

www.viswakalyanam.org

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133